Ilme Deen Ke Fazaail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 276
Weekly Booklet : 276

इल्मे दीन के फ़ज़ाइल

सफ़हात 17

तख़्ते बिल्क़ीस किस तरह आया ? 01
लुक़्मान हकीम की वसिय्यत 05
मुश्किलात आसान होने का नुस्ख़ा 11
इल्मे दीन की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन 13

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल**
सिने त़बाअ़त	:	जुमादल ऊला **1444** हि., नवम्बर **2022** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**इल्मे दीन के फ़ज़ाइल**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

एह्याउल उ़लूम, जिल्द 1 के बाब
"इल्म का बयान" से कुछ तरमीम व इज़ाफ़े के साथ

इल्मे दीन के फ़ज़ाइल

दुआए अ़त्तार या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 15 सफ़ह़ात का रिसाला : **"इल्मे दीन के फ़ज़ाइल"** पढ़ या सुन ले, उसे अपनी रिज़ा के लिये इल्मे दीन ह़ासिल करने और उस पर इख़्लास के साथ अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा। (ابن ماجہ، 1/490، حدیث:907)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

तख़्ते बिल्क़ीस किस त़रह़ आया ?

मलिका बिल्क़ीस का तख़्ते शाही अस्सी (80) गज़ लम्बा और चालीस (40) गज़ चौड़ा था, येह सोने चांदी और त़रह़ त़रह़ के जवाहिरात और मोतियों से आरास्ता था, जब ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बिल्क़ीस के क़ासिद और उस के तह़ाइफ़ को ठुकरा दिया और उस को येह ख़त़ भेजा कि वोह मुसल्मान हो कर मेरे दरबार में ह़ाज़िर हो जाए तो आप के

दिल में येह ख़्वाहिश पैदा हुई कि बिल्क़ीस के यहां आने से पहले ही उस का तख़्त मेरे दरबार में आ जाए। तख़्त मंगवाने से आप का मक़्सूद येह था कि उस का तख़्त हाज़िर कर के उसे मो'जिज़ा दिखा दें ताकि उस पर आप عَلَیْہِ السَّلَام की नुबुव्वत की हक़्क़ानिय्यत (या'नी सच्चाई) ज़ाहिर हो जाए कि मो'जिज़ा नबी की सदाक़त पर दलील होता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने चाहा कि बिल्क़ीस के आने से पहले उस तख़्त की हैअतो सूरत बदल दें और इस से उस की अ़क़्ल का इम्तिहान फ़रमाएं कि वोह अपना तख़्त पहचान सकती है या नहीं। चुनान्चे आप ने अपने दरबारियों से फ़रमाया जिसे क़ुरआने करीम में कुछ यूं बयान किया गया है :

قَالَ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اَیُّكُمْ یَاْتِیْنِیْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ یَّاْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ﴿۳۸﴾ قَالَ عِفْرِیْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَ اِنِّیْ عَلَیْهِ لَقَوِیٌّ اَمِیْنٌ ﴿۳۹﴾

(پ19، النمل:38،39)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सुलैमान ने फ़रमाया : ऐ दरबारियो! तुम में कौन है जो उन के मेरे पास फ़रमां बरदार हो कर आने से पहले उस का तख़्त मेरे पास ले आए! एक बड़ा ख़बीस[1] जिन्न बोला कि मैं वोह तख़्त आप की ख़िदमत में आप के इस मक़ाम से खड़े होने से पहले हाज़िर कर दूंगा और मैं बेशक इस पर क़ुव्वत रखने वाला अमानत दार हूं।

जिन्न का बयान सुन कर हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं येह चाहता हूं कि इस से भी जल्द वोह तख़्त मेरे दरबार में आ जाए।

1... ख़बीस : बड़ा सरकश (मा'रिफ़तुल क़ुरआन, स. 304)

येह सुन कर आप के वज़ीर ह़ज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जो इस्मे आ'ज़म जानते थे और एक बा करामत वली थे। उन्हों ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया जिस का क़ुरआने करीम में कुछ यूं बयान है। पारह 19 **सूरतुन्नम्ल** आयत नम्बर : 40

قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ؕ

(پ19، النمل:40)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इ़ल्म था कि मैं उसे आप की बारगाह में आप के पलक झपक्ने से पहले ले आऊंगा।

ह़ज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने रूह़ानी क़ुव्वत से बिल्क़ीस के तख़्त को मुल्के सबा से बैतुल मुक़द्दस तक ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के महल में खींच लिया और वोह तख़्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर लम्ह़ा भर में एक दम ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की कुरसी के क़रीब नुमूदार हो गया।

(अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 189, 190, सीरतुल अम्बिया, स. 714)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहां इस वाक़िए़ में ह़ज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की करामत का बयान है वहीं क़ुरआने करीम में आप के बा कमाल होने की ख़ुसूसिय्यत "इ़ल्म" बयान हुई। इ़ल्मे दीन बड़ी अफ़्ज़ल इ़बादत है जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से पूछा गया कि इन्सान कौन हैं ? फ़रमाया : उ़लमा।

फिर पूछा गया : बादशाह कौन हैं ? फ़रमाया : परहेज़ गार । फिर पूछा गया : घटिया लोग कौन हैं ? फ़रमाया : जो दीन के बदले दुन्या हासिल करते हैं । (المجالسة وجواہر العلم للدینوری، 1/160، رقم:300)

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस क़ौल के तहूत फ़रमाते हैं : हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ग़ैरे आ़लिम को इन्सानों में शुमार न किया क्यूं कि इल्म ही वोह ख़ुसूसिय्यत है जिस की वज्ह से इन्सान तमाम जानवरों से मुमताज़ होते हैं । लिहाज़ा इन्सान उस वस्फ़ के ज़रीए इन्सान है जिस के बाइ़स उसे इ़ज़्ज़त हासिल होती है । वोह जिस्मानी क़ुव्वत की वज्ह से इन्सान नहीं, वरना ऊंट उस से ज़ियादा ताक़त वर है । न जसामत की वज्ह से इन्सान है, वरना हाथी का जिस्म उस से कहीं ज़ियादा बड़ा है । न बहादुरी के सबब, वरना दरिन्दे उस से बढ़ कर बहादुर हैं । न इस लिये कि वोह ज़ियादा खाता है, क्यूं कि बैल का पेट उस से ज़ियादा बड़ा होता है बल्कि इन्सान इल्म ही के लिये पैदा किया गया है । (احیاء العلوم، 1/23) **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम, पारह 20, **सूरतुल अ़न्कबूत**, आयत नम्बर 43 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾

(پ20، العنکبوت:43)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और येह मिसालें हैं जिन्हें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं और इन्हें उ़लमा ही समझते हैं ।

दीन का सुतून

ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** पाक की कोई इ़बादत ऐसी नहीं की गई जो दीन की समझ बूझ ह़ासिल करने से अफ़्ज़ल हो और एक फ़क़ीह

(या'नी आ़लिम) शैत़ान पर हज़ार इ़बादत गुज़ारों से ज़ियादा भारी है। हर चीज़ का एक सुतून होता है और इस दीन का सुतून फ़िक़्ह है। (معجم الاوسط، 4/337، حدیث:6166) एक और ह़दीसे पाक में है : दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो किसी मुनाफ़िक़ में नहीं होतीं : हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ बूझ। (ترمذی، 4/313، حدیث:2693)

आ़लिमे दीन का मे'यार ?

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ह़दीस में फ़िक़्ह से मुराद वोह नहीं जो तुम समझते हो। फ़क़ीह का कम से कम दरजा येह है कि वोह इस बात का यक़ीन रखे कि आख़िरत दुन्या से बेहतर है और अगर उस पर इस बात की मा'रिफ़त सच्ची और ग़ालिब होगी तो इस की बरकत से वोह निफ़ाक़ और रिया से पाक हो जाएगा।

(एह़याउल उ़लूम (मुतर्जम), 1/46)

लुक़्मान ह़कीम की वसिय्यत

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते लुक़्मान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने बेटे को जो वसिय्यतें फ़रमाईं उन में एक वसिय्यत येह भी थी कि बेटा उ़लमाए किराम की सोह़बत में बैठा करो क्यूं कि **अल्लाह** पाक नूरे ह़िक्मत से दिलों को ऐसे ज़िन्दा करता है जैसे ज़मीन को मुसल्सल बारिश से।

(مؤطا امام مالک، 2/478، حدیث:1940)

दिल की ग़िज़ा

ह़ज़रते फ़त्ह़ मौसली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने लोगों से पूछा : अगर मरीज़ को खाने, पीने और दवा से रोक दिया जाए तो क्या वोह मर नहीं जाएगा ? लोगों ने कहा : क्यूं नहीं। फ़रमाया : दिल का भी येही मुआ़मला है कि

अगर तीन दिन तक इस से इल्मो हिक्मत को दूर रखा जाए तो वोह मुर्दा हो जाता है। (التذکرۃ فی الوعظ لابن جوزی، ص56)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते फ़त्ह़ मौसली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बिल्कुल सच फ़रमाया क्यूं कि जिस त़रह़ खाना बदन की ग़िज़ा है इसी त़रह़ इल्मो हिक्मत दिल की ग़िज़ा है जिन की बदौलत वोह ज़िन्दा रहता है और जिस के पास इल्म नहीं उस का दिल बीमार और उस की मौत लाज़िमी है। लेकिन उसे इस बात की ख़बर नहीं होती क्यूं कि दुन्या की मह़ब्बत और इस में मश्ग़ूलिय्यत इस के एह़सास को ख़त्म कर देती है, जैसा कि ख़ौफ़ के ग़लबे के वक़्त ज़ख़्म की तक्लीफ़ का एह़सास नहीं रहता अगर्चे तक्लीफ़ मौजूद होती है। फिर जब मौत उस से दुन्या के बोझ उतारती है तब वोह अपनी हलाकत मह़सूस कर के बहुत पछताता है लेकिन फिर येह उस के ह़क़ में बे फ़ाएदा होता है। येह ऐसे है जैसे मदहोश को नशे और ख़ौफ़ की ह़ालत में लगे ज़ख़्मों का एह़सास उस वक़्त होता है जब उसे ख़ौफ़ और नशे से नजात मिलती है। हम पर्दे खुलने के दिन से **अल्लाह** पाक की पनाह मांगते हैं। बेशक लोग सोए हुए हैं जब मरेंगे तो उन की आंखें खुल जाएंगी। (एह़याउल उ़लूम (मुतर्जम), 1/51)

ऐ़ब दुन्या में तू ने छुपाए ह़श्र में भी न अब आंच आए
आह ! नामा मेरा खुल रहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

लिबासे ह़या

अल्लाह पाक पारह 8, **सूरतुल आ'राफ़**, आयत 26 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَ رِيْشًاؕ وَ لِبَاسُ التَّقْوٰىۙ ذٰلِكَ خَيْرٌؕ﴾ (پ8، الاعراف:26)

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ आदम की औलाद ! बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक लिबास वोह उतारा जो तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाता है और (एक लिबास वोह जो) ज़ेबो ज़ीनत है और परहेज़ गारी का लिबास सब से बेहतर है।

एक क़ौल येह है कि इस आयत में "لِبَاسًا" से इल्म "رِيْشًا" से यक़ीन और "لِبَاسُ التَّقْوٰى" से ह़या मुराद है।

ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह यमानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है कि "ईमान बे लिबास है, इस का लिबास परहेज़ गारी है, जब कि इस की ज़ीनत ह़या और इस का फल इल्म है।" (احیاء علوم، 1/20)

शह्र के ह़ाकिम से मिलने का वक़्त नहीं

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सालिम बिन अबू जा'द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मुझे मेरे मालिक ने 300 दिरहम में ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो मैं ने सोचा कि अब कौन सा पेशा इख़्तियार करूं ? बिल आख़िर इल्मे दीन ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो गया, अभी साल भी नहीं गुज़रा था कि शह्र का ह़ाकिम मुझ से मिलने के लिये आया लेकिन मैं ने उसे इजाज़त न दी। (فیض القدیر، 3/552، تحت الحدیث:3827)

(एक बुज़ुर्ग का फ़रमान ऐसे मुआ़मले पर क्या ख़ूब सादिक़ आता है चुनान्चे) ह़ज़रते अबू अस्वद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : इल्म से बढ़ कर इ़ज़्ज़त वाली चीज़ कोई नहीं, बादशाह लोगों पर ह़ुकूमत करते हैं जब कि उ़लमा बादशाहों पर ह़ुकूमत करते हैं। (एह़याउल उ़लूम (मुतर्जम), 1/50)

फ़ज़ीलत का लुग़वी और इस्ति़लाह़ी मा'ना

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : लफ़्ज़ "फ़ज़ीलत" फ़ज़्ल से लिया गया है और "फ़ज़्ल" ज़ियादा होने को कहते हैं। जब दो चीज़ें

किसी बात में मुश्तरक (या'नी एक जैसी) हों और उन में से एक किसी इज़ाफ़ी बात से ख़ास हो तो कहा जाता है कि येह उस से अफ़्ज़ल है और इसे उस पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है जब कि वोह इज़ाफ़ी बात उस में मौजूद हो जो उस के लिये कमाल की बात हो। जैसा कि कहा जाता है : घोड़ा गधे पर फ़ज़ीलत रखता है क्यूं कि बोझ उठाने की क़ुव्वत में तो घोड़ा और गधा बराबर हैं लेकिन ह़म्ला करने, दौड़ने, सख़्त ह़म्ला आवर होने की क़ुव्वत और अच्छी सूरत की ख़ूबियां घोड़े में इज़ाफ़ी हैं। अब अगर बिलफ़र्ज़ गधे को इज़ाफ़ी सामान के साथ ख़ास किया जाए तो येह नहीं कहा जा सकता कि वोह घोड़े पर फ़ज़ीलत ले गया क्यूं कि येह जिस्मानी इज़ाफ़ा है जब कि ह़क़ीक़त में कमी जो कि कोई कमाल की बात नहीं, इस लिये कि ह़ैवान में जिस्म नहीं बल्कि मा'नविय्यत (या'नी अस्लिय्यत) और इस की सिफ़ात मक़्सूद होती हैं।

मज़ीद फ़रमाते हैं : इल्म को अपनी ज़ात के ए'तिबार से किसी की त़रफ़ इज़ाफ़त किये बिग़ैर मुत्लक़न फ़ज़ीलत ह़ासिल है क्यूं कि येह **अल्लाह** पाक का वस्फ़े कमाल, अम्बियाए किराम और मलाइकए इ़ज़ाम عَلَيۡهِمُ السَّلَام का शरफ़ है। (احیاء العلوم، 1/29 ملتقطا)

पसन्दीदा चीज़ की त़रफ़ रग़बत की वज्ह

इमाम ग़ज़ाली رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه फ़रमाते हैं : याद रहे कि ऐसी बेहतरीन चीज़ें जिन्हें ह़ासिल करने का शौक़ होता है उन की तीन क़िस्में हैं :

﴿1﴾ ऐसी चीज़ जिसे ह़ासिल करने का मक़्सद कोई और वज्ह हो जैसे रुपै पैसे, दर अस्ल रुपै पैसे काग़ज़ के टुकड़े हैं, इन का कोई फ़ाएदा नहीं है क्यूं कि काग़ज़ के नोट खाने से न पेट भरता है न प्यास बुझती है, अगर

अल्लाह पाक इन के ज़रीए हमारी ज़रूरिय्यात हासिल करना आसान न फ़रमाता तो येह नोट और रद्दी के काग़ज़ बराबर होते। (احیاء العلوم، 1/29 بتغیر) हज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से दिरहमो दीनार के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : येह इन्सान के गुज़र बसर के लिये ज़मीन में **अल्लाह** पाक की मोहरें हैं, न खाई जाती हैं न पी जाती हैं, तुम इन्हें जहां भी ले जाओगे तुम्हारी ज़रूरत पूरी होगी। (حلیۃ الاولیاء، 4/57، رقم:4729)

﴾2﴿ वोह चीज़ जिसे हासिल करने का मक़्सद ख़ुद वोही चीज़ हो जैसे आख़िरत की काम्याबी और **अल्लाह** पाक के दीदार की लज़्ज़त। **अल्लाह** पाक की अ़ता की गई ने'मतों में सब से अफ़्ज़लो आ'ला येह क़िस्म है।

﴾3﴿ वोह चीज़ जिसे हासिल करने का मक़्सद ख़ुद वोह चीज़ भी होती है और कभी उस से कोई दूसरी चीज़ भी हासिल की जाती है जैसे इन्सान चाहता है कि उस का जिस्म सलामत रहे क्यूं कि अगर उस के पाउं को चोट लगी तो तक्लीफ़ होने के साथ साथ उस की ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के कामों में ह़रज भी आता है इस लिये बन्दा कोशिश करता है कि उस का जिस्म सलामत रहे।

अब इस ए'तिबार से इल्म को देखें तो इल्म अपनी ज़ात के ए'तिबार से लज़ीज़ है लिहाज़ा वोह दूसरी क़िस्म में शामिल है (जो पहली से अफ़्ज़ल है) नीज़ वोह आख़िरत और उस की काम्याबी का वसीला और **अल्लाह** पाक के नज़्दीक होने का ज़रीआ़ है कि इस के बिग़ैर क़ुर्बे इलाही हासिल नहीं होता। आदमी के ह़क़ में सआ़दते अबदी (या'नी हमेशा हमेशा के लिये सआ़दत मन्दी) का मर्तबा सब से बुलन्द है और इस

का वसीला सब चीज़ों से अफ़्ज़ल है और सआ़दते अबदी बिग़ैर इल्मो अ़मल के ह़ासिल नहीं हो सकती और अ़मल की कैफ़िय्यत का इल्म न हो तो अ़मल तक रसाई नहीं होती। पता चला कि दुन्या व आख़िरत की अस्ल सआ़दत "इल्म" है इसी लिये येह सब से अफ़्ज़ल है। (احیاء العلوم، 1/29، اتحاف السادۃ، 1/187-190 ملخصاً) एक रिवायत में है : तुम्हारे दीन का अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जो आसान तरीन हो और दीन सीखना सब से अफ़्ज़ल इ़बादत है। (جامع بیان العلم وفضلہ، حدیث:80، ص34)

माल से बेहतर

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते कुमैल बिन ज़ियाद नख़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से फ़रमाया : ऐ कुमैल ! इल्म माल से बेहतर है कि इल्म तेरी ह़िफ़ाज़त करता है जब कि माल की तुझे ह़िफ़ाज़त करनी पड़ती है। इल्म ह़ाकिम है और माल महकूम। माल ख़र्च करने से घटता है जब कि इल्म ख़र्च करने से बढ़ता है। (الفقیہ والمتفقہ، 1/182، حدیث:176)

मज़ीद फ़रमाया : रात भर इबादत करने वाले दिन भर रोज़ा रखने वाले मुजाहिद से आ़लिम अफ़्ज़ल है और आ़लिम की मौत से इस्लाम में ऐसा रख़्ना (Gap) पड़ता है जिसे उस के नाइब के सिवा कोई नहीं भर सकता। (الفقیہ والمتفقہ، 2/197، حدیث:856)

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कुछ अश्आ़र पढ़े जिन में येह भी है : इल्म के ज़रीए़ काम्याबी ह़ासिल करो, हमेशा की ज़िन्दगी पाओगे। लोग मर जाते हैं जब कि उ़लमा ज़िन्दा रहते हैं। (الفقیہ والمتفقہ، 2/150، حدیث:769)

मुश्किलात आसान हो जाएंगी

ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अबू बक्र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं इ़राक़ में था, मेरे वालिदे मोह़तरम ने मुझे पैग़ाम भेजा कि इ़ल्म को लाज़िम कर लो ! अगर ग़रीब हो तो येह तुम्हारा माल है और अगर ग़नी हो तो येह तुम्हारा जमाल है । (احیاءالعلوم،1/24)

एक रिवायत में है : जो इ़ल्मे दीन ह़ासिल करेगा **अल्लाह** पाक उस की मुश्किलात को आसान फ़रमा देगा और उसे वहां से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा । (جامع بیان العلم وفضلہ، ص65، حدیث:198)

आ़लिमे दीन की वफ़ात

ह़दीसे पाक में है : आ़लिम ज़मीन में **अल्लाह** पाक का अमीन होता है । (جامع بیان العلم وفضلہ، ص74، حدیث: 225۔) एक और रिवायत में है : एक क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत से आसान है ।

(شعب الایمان، 2/264، حدیث:1699)

किसी अ़क़्ल मन्द का क़ौल है कि आ़लिम की वफ़ात पर पानी में मछलियां और हवा में परिन्दे रोते हैं । आ़लिम का चेहरा ग़ाइब हो जाता है लेकिन उस की यादें बाक़ी रहती हैं । (احیاءالعلوم،1/24)

इ़ल्म का उख़्रवी फ़ाएदा

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इ़ल्म इस वज्ह से भी अफ़्ज़ल है कि तुम जानते हो किसी चीज़ का नतीजा जितनी अ़ज़्मतो शान वाला होगा वोह चीज़ भी उतनी ही फ़ज़ीलत वाली होगी और तुम जान चुके हो कि इ़ल्मे दीन का उख़्रवी फ़ाएदा **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब मिल जाना है जब कि दुन्या में इस का फ़ाएदा येह है कि इ़ज़्ज़तो वक़ार में

इज़ाफ़ा और त़बीअ़तों में ज़रूरी त़ौर पर एह़तिराम करना पाया जाता है। येह मुत़्लक़ इल्म की फ़ज़ीलत है। फिर उ़लूम मुख़्तलिफ़ हैं, जब इल्म अफ़्ज़ल उमूर में से है तो इसे ह़ासिल करना अफ़्ज़ल काम की जुस्त़्जू करना और सिखाना अफ़्ज़ल काम का फ़ाएदा पहुंचाना ठहरा।

(احیاء العلوم، 1/29 ملتقطاً)

आ़लिम के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से चार अह़ादीसे मुबारका

﴿1﴾ वोह आ़लिमे दीन बहुत अच्छा है अगर उस की ज़रूरत पड़े तो नफ़्अ़ पहुंचा दे अगर उस से बे परवाही हो तो अपने को बे नियाज़ रखे।

(مشکاۃ المصابیح، 1/67، حدیث: 251)

﴿2﴾ आ़लिम और आ़बिद के दरमियान 100 दरजे हैं और हर दो दरजों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितनी मसाफ़त सधाया हुवा उ़म्दा घोड़ा 70 साल तक दौड़ कर त़ै करता है। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص43، حدیث: 118)

﴿3﴾ ह़दीसे पाक में है : मोमिन आ़लिम, मोमिन आ़बिद पर 70 दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص36، حدیث: 84)

﴿4﴾ बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है ? प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْعِلْمُ بِاللّٰہ । अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप कौन सा इल्म मुराद लेते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की ज़ात का इल्म (या'नी **अल्लाह** पाक की मा'रिफ़त या'नी पहचान का इल्म)। अ़र्ज़ की गई : हमारा सुवाल अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ है जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इल्म का इर्शाद फ़रमा रहे हैं ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की ज़ात का

इल्म हो तो थोड़ा अमल भी फ़ाएदा देता है और अगर येह न हो तो ज़ियादा अमल भी फ़ाएदे से ख़ाली होता है। (احیاء العلوم، 22/1)

दुन्या व आख़िरत की भलाई से क्या मुराद है ?

अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस इर्शादे बारी तआला [1] ﴿رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾ की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : दुन्या में "حَسَنَة" से मुराद इल्म व इबादत है जब कि आख़िरत में इस से मुराद जन्नत है। (ترمذی، 5/295، حدیث:3499)

इल्मे दीन की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन

﴿1﴾ मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम पर इल्म ह़ासिल करना लाज़िम है। बेशक **अल्लाह** पाक की एक चादरे महब्बत है और जो इल्म का एक बाब ह़ासिल कर लेता है **अल्लाह** पाक उसे वोह चादर पहना देता है। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص83، حدیث:251)

﴿2﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : इल्म सीखो इस से पहले कि उठा लिया जाए और इल्म का उठाया जाना येह है कि उ़लमा वफ़ात पा जाएंगे। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, राहे ख़ुदा में मारे जाने वाले शुहदा जब उ़लमा का मक़ाम देखेंगे तो तमन्ना करेंगे कि काश ! उन्हें भी आ़लिम उठाया जाता। (احیاء العلوم، 1/23) कोई भी आ़लिम पैदा नहीं होता इल्म सीखने से ही आता है। (کتاب الزہد للامام احمد، ص184، حدیث:899)

1... **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें आख़िरत में (भी) भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। (पारह : 2, अल बक़रह : 201)

﴾3﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : रात में कुछ देर इ़ल्म की तक्रार करना मुझे सारी रात शब बेदारी से ज़ियादा मह़बूब है। (مصنف عبد الرزاق، 10/238، حدیث: 20636) (इसी त़रह़ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से भी मन्क़ूल है।)

(احیاء العلوم، 1/23)

﴾4﴿ ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उ़लमा की सियाही का शुहदा के ख़ून से वज़्न किया जाएगा तो उ़लमा की सियाही शुहदा के ख़ून से भारी होगी। (احیاء العلوم، 1/23)

﴾5﴿ ह़ज़रते अह़नफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का क़ौल है कि जल्द ही उ़लमा मालिक बन जाएंगे और हर उस इ़ज़्ज़त का अन्जाम ज़िल्लत होता है जिसे इ़ल्म से मज़बूत़ न किया जाए। (عیون الاخبار للدینوری، ص137)

﴾6﴿ ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : इ़ल्म की अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जिस की त़रफ़ येह मन्सूब हो ख़्वाह छोटी सी बात में, तो वोह ख़ुश होता है और जिस से इसे उठा लिया जाता है वोह रन्जीदा होता है। (احیاء العلوم، 1/23)

﴾7﴿ एक आ़लिम का क़ौल है कि काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि जिसे इ़ल्म नहीं मिला उसे क्या मिला और जिसे इ़ल्म मिला उसे क्या नहीं मिला।

(احیاء العلوم، 1/23)

﴾8﴿ किसी अ़क़्ल मन्द से पूछा गया कि कौन सी चीज़ें जम्अ़ करनी चाहिएं ? जवाब दिया : वोह चीज़ें कि जब तुम्हारी कश्ती डूब जाए तो वोह तुम्हारे साथ तैरने लगें या'नी इ़ल्म। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص80، حدیث: 246) बा'ज़ ने कहा : कश्ती के ग़र्क़ होने से मुराद मौत के ज़रीए़ बदन का हलाक होना है। (احیاء العلوم، 1/23)

﴾9﴿ कहा गया है कि जो हिक्मत को लगाम बना लेता है लोग उसे इमाम बना लेते हैं और जो हिक्मत को समझ लेता है लोग उसे इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص80، حدیث:246)

इल्म सीखने सिखाने की फ़ज़ीलत

एक बार हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हुज्रए मुबारका से मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो दो हल्क़े सजे हुए थे, एक क़ुरआने मजीद पढ़ रहा था और **अल्लाह** पाक से दुआ मांग रहा था जब कि दूसरा इल्म सीखने सिखाने में मश्ग़ूल था। फ़रमाया : "दोनों भलाई पर हैं।" येह लोग क़ुरआन की तिलावत और **अल्लाह** पाक से दुआ कर रहे हैं, **अल्लाह** पाक चाहे तो इन्हें अ़ता करे या न करे और येह लोग इल्म सीखने सिखाने में मश्ग़ूल हैं और बेशक मैं मुअ़ल्लिम बना कर भेजा गया हूं। फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहीं तशरीफ़ फ़रमा हुए। (ابن ماجہ، 1/150، حدیث:229)

फ़ेहरिस

इल्मे दीन के फ़ज़ाइल.....1
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत.....1
तख़्ते बिल्क़ीस किस त़रह़ आया ?....1
दीन का सुतून.....4
आ़लिमे दीन का मे'यार ?.....5
लुक़्मान ह़कीम की वसिय्यत.....5
दिल की ग़िज़ा.....5
लिबासे ह़या.....6
शह्र के ह़ाकिम से मिलने का वक़्त नहीं...7
फ़ज़ीलत का लुग़वी और इस्त़िलाही मा'ना..7
पसन्दीदा चीज़ की त़रफ़ रग़बत की वज्ह.8
माल से बेहतर.....10
मुश्किलात आसान हो जाएंगी.....11
आ़लिमे दीन की वफ़ात.....11
इल्म का उख़्रवी फ़ाएदा.....11
चार अह़ादीसे मुबारका.....12
दुन्या व आख़िरत की भलाई से
क्या मुराद है ?.....13
इल्मे दीन की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल
अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन.....13

अगले हफ़्ते का रिसाला